thou fo|k & 14 ok jk"Vh; lEeyu gnjkckn

fnukd % 1&4 vDVcj 2009-

LFkku % ikFkfed vH;kl 'kkyk] rijku] ftyk& eMd ¼vk/kin'k½

हैदराबाद से 50 कि.मी. दूर उपरोक्त आवासीय शाला जो कि भव्यता तथा शिक्षा की आधुनिक संस्कृति को लिए हुए है, के सुरम्य वातावरण में जीवन विद्या के इस राष्ट्रीय सम्मेलन में परिषद की ओर से हम दोनों ने अपनी सहभागिता दी। छत्तीसगढ़ से हम दोनों के अलावा अभ्युदय संस्थान अछोटी में 6 मासीय अध्ययन शिविर के 3 प्रतिभागी श्री केशव राम साहू, श्री ओमनारायण शर्मा, श्री अंगद कैवर्त्य संस्थान के प्रबोधक श्री सोमदेव त्यागी जी की अनुमति से स्वयं के व्यय पर सम्मेलन में शामिल हुए।

इस सम्मेलन में देश के विभिन्न राज्यों से लगभग 250 प्रतिभागी शामिल हुए। सम्मेलन की शुरूआत उ.प्र. से आए प्रमुख प्रबोधक डॉ रण सिंह आर्य जी के द्वारा वर्तमान दशा–दिशा के साथ ही विगत राष्ट्रीय सम्मेलनों की समीक्षा से हुई। उपस्थित प्रतिभागियों ने जीवन विद्या के प्रकाश में अपने स्तर पर किए जा रहे गतिविधियों की प्रस्तुति दी। ऐसे कुल 22 केन्द्रों ने अपनी प्रस्तुति दी। इन प्रमुख केन्द्रों में कनाडा, दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, पुणे, हैदराबाद, इंदौर, भोपाल, ग्वालियर, कानपुर, मुरादाबाद, बिजनौर, बांदा एवं बेगुसराय आदि शामिल हैं।

उपरोक्त सभी प्रस्तुतियां व्यवस्था के पांचो आयामों यथा शिक्षा–संस्कार, स्वास्थ्य–संयम, न्याय –सुरक्षा, उत्पादन–कार्य एवं विनिमय–कोष से संबंधित था। उत्पादन–कार्य के अंतर्गत जीरो बजट खेती एवं कुटीर उद्योग चलाने संबंधी बांदा एवं मुरादाबाद की प्रस्तुति को काफी सराहा गया। इसी प्रकार शिक्षा–संस्कार आयाम में स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा छत्तीसगढ़ में किए जा रहे गतिविधियों की हमारी प्रस्तुति को भरपूर सम्मान मिला। सभी प्रतिभागियों ने इसे परिवर्तनकारी कदम मानते हुए आशा भरी नजरों से भावी मॉडल के रूप में इसे रेखांकित किया। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सोमैया विद्या विहार मुम्बई एवं IIIT हैदराबाद द्वारा जीवन विद्या को पाठ्यक्रम में शामिल करने संबंधी प्रस्तुति भी अत्यंत सराहनीय रही। शेष केन्द्रों की प्रस्तुति में अपने को बहुगुणित करने का प्रयास काफी अच्छे ढंग से सामने आया जिससे प्रतिभागी रोमांचित होते रहे।

सम्मेलन में विचार संगोष्ठी

सम्मेलन में निम्नांकित विषयों पर विचार संगोष्ठी हुई –

- लोक शिक्षा संस्कार परंपरा
- विद्या के प्रकाश में जीने के विभिन्न आयामों में प्रयास की आवश्यकता व संभावना
- जन अभियान के संदर्भ में **मैत्री संवाद यात्रा** से समाधान का प्रयास आदि।

बाबाजी का उद्‌बोधन

सम्मेलन में प्रत्येक दिन बाबाजी का एक घंटे का उद्‌बोधन निम्नांकित विषयों पर रखा गया था–

- परिवार मूलक स्वराज व्यवस्था
- मानवीय शिक्षा संस्कार व्यवस्था
- सहअस्तित्व–नित्य प्रभावी है
- अनुसंधान की आवश्यकता

अपने उद्‌बोधन में शिक्षा के लोक व्यापीकरण के लिए अध्ययन शिविर की महत्ता को उन्होंने रेखांकित किया एवं इस कड़ी में **अभ्युदय संस्थान तथा छत्तीसगढ़ स्कूल शिक्षा विभाग** द्वारा किये गये प्रयासों का बार–बार उल्लेख वे करते रहे और इसकी परम्परा बनने संबंधी अपनी आश्वस्ति दिखायी। बाबा जी ने अपनी चाहत के रूप में कहा कि मैं इस अध्ययन परंपरा को इसी शरीर यात्रा में प्रामाणिकता के रूप में देखना चाहता हूँ।

सम्मेलन की प्रमुख झलकियां

- सम्मेलन का संचालन पुणे से आये प्रबोधक श्री राम नरसिम्हन ने किया।
- छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह जी के अभ्युदय संस्थान अछोटी प्रवास संबंधी सी.डी. सम्मेलन में दिखाई गई जिसे सभी प्रतिभागियों ने खूब सराहा।
- छत्तीसगढ़ स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा 6 मासीय अध्ययन शिविर की विभिन्न झलकियां बड़े –बड़े फोल्डर के रूप में प्रस्तुत की गई थी।
- अधिकतर प्रतिभागियों ने IIIT हैदाराबाद में चल रहे, चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम का भी अवलोकन किया।

प्रमुख उपलब्धियाँ

- राष्ट्रीय स्तर पर छत्तीसगढ़ स्कूल शिक्षा विभाग में चेतना विकास मूल्य शिक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे अभिनव प्रयास की प्रस्तुति से छत्तीसगढ़ अपनी अलग पहचान लिए शिक्षा संस्कार के आशा केन्द्र के रूप में उभरा।
- छत्तीसगढ़ में किए जा रहे प्रयास से अन्य राज्यों को भी इस दिशा में कार्य करने की प्रेरणा मिली। फलस्वरूप यह संभावना बलवती हुई कि चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रसार तीव्र गति से अन्य राज्यों में भी हो सकेगा। जिससे भावी पीढियां नित्य विश्वास एवं समझ के साथ अपना निर्णय ले सकेंगे।
- विभिन्न प्रतिभागियों के साथ चर्चा–विचार विमर्श से हमें बहुत कुछ सीखने को मिला जिससे हमारी सोच का दायरा बढ़ा है। साथ ही आत्मविश्वास में भी वृद्धि हुई है।

इस 4 दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का समापन IIIT हैदाराबाद के डायरेक्टर डॉ. राजीव सांगल जी के द्वारा आभार प्रदर्शन एवं बाबाजी के शुभाशीष के साथ हुआ।

राधेश्याम बघेल
कृष्णकुमार साहू,
सीमेट, एस.सी.ई.आर.टी.,
रायपुर

शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में ''जीवन विद्या परिचय शिविर'' आयोजित

शालेय शिक्षा में मानवीय चेतना मूल्य विकास शिक्षा ''जीवन विद्या'' के प्रबोधन के लिए विभाग द्वारा अभ्यूदय संस्थान अछोटी दुर्ग में 6 माह का अध्ययन शिविर संचालित है। जिसमें 20 दिवस अध्ययन एवं माह के शेष 10 दिवस का कार्यक्रम अधोलिखित है–

1. 15.07.2009 से 03.08.2009
2. 17.08.2009 से 05.09.2009
3. 19.09.2009 से 08.10.2009
4. 21.10.2009 से 08.11.2009
5. 19.11.2009 से 08.12.2009
6. 01.01.2010 से 20.01.2010

इसी तारतम्य में प्रथम 10 दिवसीय कार्यक्रम के अंतर्गत प्रदेश के सभी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में जीवन विद्या परिचय शिविर आयोजित किया गया। जिसका विवरण निम्नानुसार है –

lkfjp; f'kfoj dk mÌ'; &

1. भावी शिक्षकों के द्वारा विद्यालयों में शुरूआत के क्रम में छात्रा अध्यापकों को ''मानव चेतना विकास एवं मूल्य शिक्षा'' से परिचित कराना ताकि वे इसके माध्यम से विद्यार्थियों एवं अभिभावकों में परस्पर विश्वास एवं संबंध पूर्वक जीने की पात्रता विकसित कर सके। विभिन्न शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में शिविर में उपस्थित छात्राध्यापकों एवं वहॉ के शिक्षकों की जानकारी निम्नानुसार है –

क्रं.	शिक्षक प्रशिक्षण संस्था का नाम	शिविरार्थियों की संख्या	
		छात्राध्यापक	अध्यापक
1	आई. ए. एस. ई. बिलासपुर	90	-
2	सी.टी.ई. रायपुर	103	-
3	डाइट, रायपुर	122	-
4	डाइट, नगरी	105	2
5	डाइट, महासमुंद	83	12
6	डाइट, कांकेर	65	-
7	डाइट, बस्तर	83	-
8	डाइट, दंतेवाड़ा	61	-
9	डाइट, बेमेतरा	60	-
10	डाइट, कबीरधाम	95	5
11	डाइट, जांजगीर	112	4
12	डाइट, कोरबा	65	15
13	डाइट, कोरिया	70	-
14	डाइट, धर्मजयगढ़	108	-
15	डाइट, जशपुर	87	3
16	डाइट, अंबिकापुर	72	-
17	डाइट, पेन्ड्रा	72	4
18	डाइट, खैरागढ़	120	11

19	बी.टी.आई., बिलासपुर	55	-
20	बी.टी.आई. डोगरगांव	73	-
	;kx	1701	56

2. छत्तीसगढ़ के विद्यालयों में ''मानव चेतना विकास एवं मूल्य शिक्षा'' आधारित पाठ्यक्रम लागू करने की तैयार के अनुक्रम में अभ्यूदय संस्थान अछोटी में अध्ययनरत् लगभग 60 शिविरार्थियों (भावी प्रबोधक) में आत्मविश्वास तथा स्वमूल्यांकन की प्रक्रिया सम्पन्न कराना।

f'kfoj dh miyfC/k;k &

- 20 शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में लगभग 1700 छात्राध्यापक एवं 56 अध्यापकों ने शिविर में सक्रिय रूप से भाग लिया। उनके मूल्यांकन से यह पता चला की इस शिविर से वे अत्याधिक प्रभावित हैं। उन्होंने इसे स्कूल के पाठ्यक्रम के साथ ही साथ डी.एड. पाठ्यक्रम में शामिल किया जावें।
- संस्थान में शिविराथिर्यो ने कहा कि माह में कम से कम एक बार इस प्रकार का शिविर आयोजित किया जाए।
- शिविरार्थियों ने बताया की उनके जीवन में ये शिविर के सात दिन अत्यन्त महत्वपूर्ण है इससे स्वयं के बारे में जानने की प्रक्रिया प्रारंभ हुई है।
- शिविरार्थियों ने बताया की परिवार में शिविर की जब चर्चा होती थी तो वहॉ भी इस संबंध में सकारात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त हुई।
- शिविरार्थियों ने परिवार में हुए ऐसे घटनाओं की जानकारी प्रबोधकों को अपनी मूल्यांकन के समय दिए जिसमें भय, प्रलोभन व आस्था के कारण कई बार आत्महत्या की सोच पनपना तथा स्थानीय निर्वाचनों में अनेक अपराध घटित होना या अपनी विसंगतियों से रूबरू होना जैसे बातों को स्वीकार की गई है तथा यह भी कहा की ऐसी घटनाओं को जीवन विद्या की जानकारी से रोका जा सकता है।
- डाइट कोरबा के शिविरार्थी डॉ. शरद पांटले ने बताया कि राम कृष्ण मिशन हरदी बाजार के एक स्वामी जी को जब उन्होंने शरीर व जीवन के विषय में बताया तो उस स्वामी जी ने कहा कि इस शरीर यात्रा में मैनें विभिन्न ग्रंथो का अध्ययन किया है। परंतु शरीर व जीवन तथा उनकी क्रियाओं की स्पष्टता आज तक मैनें कही नहीं पाई। इतने कम उम्र में एक ही शिविर से जब इतनी उपलब्धि हुई है। तो पूरे अध्ययन से काफी संभावना बनती है। प्रबोधकों से भविष्य में मिलकर उस स्वामी ने और बाते जानने की इच्छा जाहिर की ।
- संस्थान के शिक्षकों ने स्वीकार किया की संस्थान संचालन हेतु निर्धारित पूरे समय तक छात्राध्यापकों को बिठाकर रखना काफी मुश्किल होता था। परन्तु इस शिविर में समयपूर्व छात्राध्यापकों का उपस्थित होना तथा संध्या 5.30 बजे तक उत्सुकता पूर्वक उपस्थित रहना बहुत बड़ी उपलब्धि है।
- समाचार पत्रों में भी इस शिविर की चर्चा सुर्खियों में रही।
- प्रबोधकों ने स्वीकार किया की शिविर में उन्हें स्वयं के आचरण को जांचने तथा नियत्रित करने का अवसर मिला तथा उनका आत्मविश्वास बढ़ा है।

- शिविर हेतु एक वरिष्ठ तथा एक कनिष्ठ अध्ययनरत् प्रबोधकों को नियुक्त किया गया था। शिविर उपरांत प्रबोधकों ने बताया कि अब वे अकेलें ही सात दिन का शिविर ले सकते है। इससे प्रबोधन हेतु क्षमता विकसित हुई है।
- अभ्युदय संस्थान के प्रबोधक साधन भट्टाचार्य सोमदेव त्यागी, अंजनी अग्रवाल, योगेश शास्त्री, सुवर्णा शास्त्री, राजन शर्मा, आदि ने इस प्रयास की सराहना करते हुए कहा कि अध्ययनरत् शिविरार्थियों की प्रबोधन क्षमता में विकास अच्छी स्वभावगति का संकेत है।